समीप आत्मा की निशानियाँ

14.2.78

अव्यक्त बापदादा बोले :–

यं को सदा बाप-दादा के साथ अर्थात् सदा समीप अनुभव करते हो ? समीप आत्मा की निशानी क्या होगी ? जितना जो समीप होगा उतना स्थिति में, कर्त्तव्य में, गुणों में बाप समान अर्थात् सदा सम्पन्न, अर्थात् दाता होगा। जैसे बाप हर सेकेण्ड और संकल्प में विश्व कल्याणकारी है वैसे बाप समान विश्व कल्याणकारी होगा। विश्व कल्याणकारी का हर संकल्प हर आत्मा के प्रति, प्रकृति के प्रति शुभ भावना वाला होगा। एक भी संकल्प शुभ भावना के सिवाए नहीं होगा। जैसे बीज फल से भरपूर होता है अर्थात् सारे वृक्ष का सार बीज में भरा हुआ होता है। ऐसे संकल्प रूपी बीज में शुभ भावना, कल्याण की भावना, सर्व को बाप समान बनाने की भावना, निर्बल को बलवान बनाने की भावना, दुःखी अशान्त को स्वयं की प्राप्त हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी,शान्त बनाने की भावना, यह सर्व रस या सार हर संकल्प में भरा हुआ होगा। कोई भी संकल्प रूपी बीज इस सार से खाली अर्थात् व्यर्थ नहीं होगा। कल्याण की भावना से समर्थ होगा।

जैसे स्थूल साज़ आत्माओं को अल्प काल के लिए उल्लास में लाते हैं। न चाहते हुए भी सबके पाँव नाचने लगते हैं ना, मन नाचने लगता है, वैसे विश्व कल्याणकारी का हर बोल रूहानी साज़ के समान उत्साह और उमंग दिलाता है। उदास आत्मा बाप से मिलन मनाने का अनुभव करती और खुशी में नाचने लग पड़ती। विश्व कल्याणकारी का कर्म, कर्मयोगी होने के कारण हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य होता है। हर कर्म की महिमा कीर्तन करने योग्य होती। जैसे भक्त लोग कीर्तन में वर्णन करते हैं देखना अलौकिक, चलना अलौकिक, हर कार्य इन्द्रियों की महिमा अपरमपार करते रहते हैं,ऐसे हर कर्म महान अर्थात् महिमा योग्य होता है। ऐसी आत्मा को कहा जाता है बाप समान समीप आत्मा। ऐसे विश्व कल्याणकारी आत्मा का हर सेकेण्ड का सम्पर्क आत्मा को सर्व कामनाओं की प्राप्ति का अनुभव कराता है। कोई आत्मा को शक्ति का, कोई को शान्ति का, मुश्किल को सहज करने का, अधीन से अधिकारी बनने का, उदास से हर्षित होने का, इसी प्रकार विश्व-कल्याणकारी महान् आत्मा का सम्पर्क

१. नींव, आधार शिला २. आधारशिला समारोह ३. लहरें ४. एक ५. छूट गुंजाइश

सदा उमंग और उत्साह दिलाता है। परिवर्तन का अनुभव कराता है, छत्रछाया का अनुभव कराता है। ऐसे विश्व-कल्याणकारी अर्थात् समीप आत्मा बनने वाले ऐसे को ही लगन में मगन रहने वाली आत्मा कहा जाता है। ऐसे बन रहे हो ना?

लकी तो सभी हो जो बाप ने अपना बना दिया। बाप ने बच्चों को स्वीकार किया अर्थात् अधिकारी बनाया। यह अधिकार तो सबको मिल ही गया। लेकिन विश्व का मालिक बनने का अधिकार, विश्व-कल्याणकारी बनने के आधार से होगा। अब हरेक अपने आपसे पूछो अधिकारी बने हैं? राज्य-भाग के अधिकारी बने हैं। तख्तनशीन बनने के अधिकारी बने हैं या रॉयल फ़ैमिली में आने के अधिकारी बने हैं? या रॉयल फेमली के सम्पर्क में आने के अधिकारी बने हैं। कहाँ तक पहुँचे हैं? राज्य-भाग्य के अधिकारी बने हैं?

विदेशी आत्माएँ अपने को क्या समझती हैं। सब राज्य करेंगे या राज्य में आयेंगे? क्या जो मिलेगा वह मंजूर है? विदेशी आत्माओं में से सतयुग की ८ बादशाही में तख्तनशीन बनने के उम्मीदवार कौन समझता है? ८ बादशाही में से लक्ष्मी नारायण की फर्स्ट, सेकेण्ड उसमें आयेंगे। ८ बादशाही में आने के लिए क्या करना पड़ेगा? या यह सोचा है कि सिर्फ ८ ही हैं। बहुत सिम्पल बात है, यह देखो कि हर समय हर परिस्थिति में अष्ट शक्तियां साथ-साथ इमर्ज रूप में होती हैं? अगर दो-चार शक्तियां हैं और एक भी शक्ति कम है तो अष्ट बादशाहियों में नहीं आ सकते। अष्ट शक्तियों की समानता हो और एक ही समय अष्ट ही शक्तियां इमर्ज चाहिएं। ऐसे भी नहीं कि सहन शक्ति ८००% लेकिन निर्णय शक्ति ६०% या ७०% है। दोनों में समानता चाहिए अर्थात् परसेन्टेज फुल चाहिए। तब ही सम्पूर्ण राज्य गद्दी के अधिकारी होंगे। अब बताओ क्या बनेंगे? अष्ट लक्ष्मी नारायण के राज्य या तख्त के अधिकारी होंगे।

विदेशी आत्माओं में उमंग और हिम्मत अच्छी है। हिम्मते बच्चे मददे बाप। हाईजम्प का सैम्पल बन सकते हैं। लेकिन यह सब बातें ध्यान में रखनी पड़ेंगी। विशेष आत्माएँ हो तब तो बाप-दादा भी जानते हैं, रेस में नम्बर वन दौड़ लगाने वाले ऐसे उमंग उत्साह वाले दूर रहते भी समीप अनुभव करने वाले, ऐसी आत्मायें भी हैं ज़रूर। अब स्टेज पर प्रेक्टीकल में अपना पार्ट बजाओ? पुरुषार्थ को आगे बढ़ाना है और फर्स्ट नम्बर की विशेषता क्या है उसी प्रमाण अपना पुरुषार्थ करना है, हर कर्म में चढ़ती कला हो। अच्छा

अफ्रीका पार्टी प्रति

सब तीव्र पुरुषार्थी हो ना? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् सोचा और किया। सोचने और करने में अन्तर नहीं। जैसे कई बातों में प्लान बहुत बनाते हैं, प्रैक्टीकल में अन्तर हो जाता है, तो तीव्र पुरुषार्थी जो होगा वह जो प्लान बनाएगा वही प्रैक्टीकल होगा। तो ऐसे तीव्र पुरुषार्थी हो ना?

१. आश्चर्यजनक

पराया राज्य होने के कारण परिस्थितियां तो आपके तरफ़ बहुत आती हैं, लेकिन जो सदा बाप के साथ है उसके आगे परिस्थिति भी स्वस्थिति के आधार पर परिवर्तन हो जाती है। पहाड़ भी राई बन जाता है। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कई बार यह सब बातें पार कर चुके हैं। नथिंग न्यू। नई बात में घबराना होता। लेकिन नथिंग-न्यू ऐसा अनुभव करने वाले सदा कमल पुष्प के समान रहते हैं। जैसे पानी नीचे होता है, कमल ऊपर रहता है, इसी प्रकार परिस्थिति नीचे है, हम ऊपर हैं, नीचे की बात नीचे। कभी कोई बात आवे तो सोचो बाप-दादा हमारे साथ है। आलमाइटी अर्थोरिटी हमारे साथ है। आलमाइटी के आगे कितनी भी बड़ी परिस्थिति चींटी के समान है। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन जो बाप के बने हैं उनका बाप ज़िम्मेवार है। सोचो नहीं- कहां रहेंगे, कैसे रहेंगे, क्या खायेंगे। सच्चे दिल का साथी बाप है। जब तक बाप है तब तक भूखे नहीं रह सकते। जब भक्तों को अनेक प्रकार के अनुभव होते हैं, वह तो भिखारी हैं उनका पेट भर जाता है तो आप तो अधिकारी हैं, आप भूखे कैसे रह सकते। इसलिए ज़रा भी घबराओ नहीं, क्या होगा ? जो होगा वह अच्छा होगा। सिर्फ छोटा सा पेपर होगा कि कहां तक निश्चय है ? पेपर सारे जीवन का नहीं होता, एक या दो घण्टे का पेपर होता है। अगर बाप-दादा सदा साथ है, पेपर देने के टाइम पर एक बल एक भरोसा है तो बिल्कुल ऐसे पार हो जायेंगे जैसे कुछ था ही नहीं। जैसे स्वप्न होता है ना, स्वप्न की जो बातें होती वह उठने के बाद समाप्त हो जाती, तो यह भी दिखाई बड़ा रूप देता लेकिन है कुछ नहीं। तो ऐसे निश्चय बुद्धि हो ? हरेक के मस्तक के ऊपर विक्टरी[९] का तिलक लगा हुआ है तो ऐसी आत्माएँ जो हैं ही विजय के तिलक वाले, उनकी हार हो नहीं सकती। मेहनत करके आये हो, परिस्थिति पार करके आये हो इसलिए बाप दादा भी मुबारक देते हैं। यह भी ड्रामा में है जैसे स्टीमर टूट जाता है तो कोई कहां कोई कहां जाकर पड़ते हैं, यह भी द्वापर में सब बिछुड़ गये, कोई विदेश में कोई देश में, अभी बाप बिखरे हुए बच्चों को इकट्ठे कर रहे हैं। अभी बेफिकर रहो। कुछ भी होगा तो पहले बाबा के सामने आयेगा। महावीर हो ना। कहानी सुनी है ना भट्ठी के बीच पूंगरे बच गये। क्या भी हो लेकिन आप सेफ हो सिर्फ़ माया प्रुफ़ की ड्रेस पड़ी होनी चाहिए। ड्रेस तो सदा साथ रहती है ना माया प्रूफ की। प्लेन में भी देखो एमर्जेन्सी में ड्रेस देते हैं कि कुछ हो तो पहन लेना। तो आपको बहुत सहज साधन मिला है।

एक-एक रतन वैल्युएबल है क्योंकि अगर वैल्युएबल रतन नहीं होते तो कोटो में कोई आप ही कैसे आते। जिसको दुनिया अपनाने के लिए तड़प रही है उसने मुझे अपना लिया। एक सेकेण्ड के दर्शन के लिए दुनिया तड़प रही है, आप तो बच्चे बन गये तो कितना नशा, कितनी खुशी होनी चाहिए, सदा मन खुशी में नाचता रहे। वर्तमान समय की खुशी का नाचना भविष्य चित्र में भी दिखाते हैं। कृष्ण को सदैव डान्स के पोज़ में दिखाते हैं ना।

जैसे बाप जैसा कोई नहीं वैसे आपके भाग्य जैसा और कोई भाग्यशाली नहीं। अच्छा– जो नहीं पहुँच सके हैं उन्हों को भी बहुत-बहुत याद देना। बाप-दादा का स्नेह अवश्य समीप लाता है। अमृतवेले उठ बाप से रूह रूहान करो तो सब परिस्थतियों का हल स्पष्ट दिखाई देगा। कोई भी बात हो उसका रेस्पॉन्सड रूह रूहान में मिल जायेगा। मधुबन वरदान भूमि से विशेष यह वरदान लेकर जाना तो और भी लिफ़्ट मिल जायेगी। जब बाप बैठे हैं बोझ उठाने के लिए तो खुद क्यों उठाते। जितना हल्का होंगे उतना ऊपर उड़ेंगे। अनुभव करेंगे कि कैसे हल्के बनने से ऊँची स्टेज हो जाती है।

बाप को जान लिया, पा लिया इससे बड़ा भाग्य तो कोई होता नहीं। घर बैठे बाप मिल गया। बाप ने ही आकर जगाया ना बच्चे उठो, देश कोई भी हो लेकिन स्थिति सदा बाप के साथ रहने की हो, चाहे देश से दूर हैं लेकिन बाप के साथ रहने वाले नजदीक से नज़दीक हैं। कुमारियां निर्बन्धन हैं किसलिए ? सेवा के लिए। ड्रामा में यह भी एक लिफ्ट है। इस लिफ्ट का लाभ लेना चाहिए। जितना-जितना अपना समय ईश्वरीय सेवा में लगाती जायेंगी तो लौकिक सर्विस का भी सहयोग मिलेगा, बन्धन नहीं होगा। कुमारियां बाप को अति प्रिय हैं क्योंकि जैसे बाप निर्बन्धन है वैसे कुमारियां हैं। तो बाप समान हो गई ना। अच्छा।

ट्रिनीडाड – ग्याना

वरदान भूमि में आकर अनेक वरदानों से स्वयं को सम्पन्न बनाया। मधुबन है ही कमाई से झोली भरने का स्थान। मधुबन आना अर्थात् अपने को वर्तमान और भविष्य के अधिकारी बनने का स्टैम्प लगाना। अधिकारी बनने का साधन है, माया की अधीनता को छोड़ना। तो अधिकारी हो ना। अच्छा।

कनाडा

कनाडा ने कितने रतन निकाले हैं। क्वान्टिटी नहीं तो क्वालिटी तो है। जब एक दीपक से दीपमाला हो जाती है तो एक से इतने तो बने हैं ना। इसलिए एक-एक को समझना चाहिए कि मुझ एक को अनेकों को सन्देश देकर माला तैयार करनी है। जो भी सम्पर्क में आवें उन्हें बाप का परिचय देते चलो तो कोई न कोई निकल आएगा। हिम्मत नहीं हारना कि कोई निकलता नहीं, निकलेंगे। कोई-कोई धरनी फल थोड़ा देरी से देती है कोई जल्दी से। इसलिए जहां भी ड्रामा अनुसार सेवा के निमित्त बने हो तो ज़रूर कोई रतन है तभी निमित्त बने हो। लक्ष्य पावरफुल रखो कि अब हमें सेवा से सबूत देना ही है। तो मेहनत से सफलता हो ही जाएगी।

लेस्टर

सदा अतीन्द्रिय सुख में झूमने वाले हो ना। बाप मिला, सब कुछ मिला, इसी स्मृति से अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति ऑटोमैटिकली हो जायेगी। दु:ख की अविद्या, दु:ख का नाम निशान नहीं। जैसे भविष्य में दु:ख और अशान्ति का अज्ञान होगा वैसे अभी भी अनुभव करेंगे कि दु:ख अशान्ति की दुनिया ही और है। वह कलियुगी है हम संगमयुगी हैं। संगमयुगी के पास दु:ख अशान्ति का नाम नहीं, दु:खी को देख तरस आएगा। दु:ख का अनुभव तो बहुत समय किया। अब संगमयुग है ही अतीन्द्रिय सुख में रहने का समय, यह अनुभव सतयुग में भी नहीं होगा। जैसा समय वैसा लाभ लो। सीज़न है अतीन्द्रिय सुख पाने की, तो सीज़न में न पाया तो कब पायेंगे। बाप की याद ही झूला है, इस झूले में ही झूलते रहो, इससे नीचे न आओ। लेस्टर का भी सर्विस में नम्बर आगे है। लन्दन में लेस्टर की महिमा भी अच्छी है। रहमदिल है जो हमजिन्स को बढ़ाते जाते। कुमार, कुमारियों, युगल सब वृद्धि को पाते जा रहे हैं, रिज़ल्ट अच्छी है, लेकिन और भी बढ़ाओ। ऐसी संख्या बढ़ जाये जो जहाँ देखो वहाँ ब्राह्मण ही दिखाई दें।

मॉरिशियस

सदा स्वयं बाप द्वारा सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न समझते हो? जैसे बाप सागर है, सागर अर्थात् सम्पन्न, वैसे ही अपने को सम्पन्न समझते हो? अगर सम्पन्न नहीं होंगे तो माया का वार किसी न किसी रूप में होता रहेगा। सम्पन्न अर्थात् माया जीत। संगम पर ही मायाजीत बनने की बात है, सतयुग में नहीं। मायाजीत वर्तमान का टाइटल है, उसका अभी अनुभव करना है। जितनी लगन उतना निर्विघ्न। अच्छा।

हांगकांग

सदा एक ही लगन रहती है? अपनी हमजिन्स को जगाने की। अपने बिछुड़े हुए परिवार की माला में पिरोयें यही लगन रहती है? इसके सिवाए और जो कुछ भी करते वो निमित्त मात्र। लौकिक में रहते न्यारे और प्यारे बनना है। बनाना है ब्राह्मणों से और चुक्तू करना है अज्ञानी आत्माओं से, सम्पर्क सम्बन्ध से बिल्कुल पानी से ऊपर, कीचड़ से ऊपर कमल समान रहना है। ऐसी स्थिति रहती है कि थोड़ा सा मोह है? नष्टोमोहा बनने का तरीका है अपनी जिम्मेवारी नहीं समझो, ज़िम्मेवारी समझते तो मोह हो जाता, ज़िम्मेवारी छोड़ना अर्थात् नष्टोमोहा। खुद स्वयं को बच्चा समझो, बड़ा नहीं। बच्चा समझना अर्थात् नष्टोमोहा होना। बड़ा समझते तो बाप भूल जाता। बच्चा समझने से बाप की याद स्वत: आयेगी। हांगकांग की धरनी कम नहीं है, फलीभूत धरनी है और अनेक फल निकल सकते हैं। सिर्फ शक्ति सेना महावीरनी बन स्टेज पर आओ। खुशी का जो अखुट खज़ाना मिला है, इसी खज़ाने में सदा खेलते रहो। याद का रिटर्न यादगार बनाकर दिखाओ।

लन्दन

सदैव अपने को लाइट हाउस और माइट हाउस समझते हो? अनेक आत्माओं को अंधियारे से रोशनी में लाना यह लाइट हाउस का कर्त्तव्य है। तो हर एक अपने को ऐसा लाइट हाउस अनुभव करते हो? जैसा बाप वैसा बच्चा। जो बाप का धन्धा–वही बच्चे का तो बाप दाता है तो हर एक बच्चे को भी यही लक्ष्य रखना है कि हमें भी दाता बनना है। वरदान भूमि में पहुँचने वाली आत्मायें विश्व-कल्याण के निमित्त बन सकती हैं। यह अनुभव करते हो कि हम वरदान भूमि पर पहुँचे हुए हैं? नये-नये क्या समझते हैं? ऐसा भाग्य जो विदेश से इस भूमि पर अधिकारी बनकर आये हो। ऐसा भाग्य अब तक भक्त लोग गायन करते हैं कि ऐसा भाग्य कब मिल जाए तो ऐसे अपने को भाग्यशाली अनुभव करते हो? बाप तो हर एक बच्चे को अपने से भी ऊँचा बनाते हैं इसलिए बच्चे को कहते ही हैं सिरताज। ऐसा सिरताज अपने को समझते हो? माया से घबराते तो नहीं? माया को जन्म देने वाले भी आप हो। जब कमज़ोर होते तो माया को जन्म देते, कमज़ोर न हो तो माया जन्म ही न ले। न जन्म दो न घबड़ाओ। मायाजीत बनने का वरदान संगम पर बाप द्वारा मिला है। यह तो अनुभव करते हो कि हम कल्प पहले वाले हैं। जब यह याद है हम कल्प पहले वाले हैं तो कल्प पहले क्या किया था? कल्प-कल्प के विजयी हो, यह स्मृति रहे तो कोई भी बात बड़ी नहीं लगेगी, सहज लगेगी।

आस्ट्रेलिया

पाण्डव सेना और शक्ति सेना को देख बाप-दादा भी हर्षित होते हैं। हर एक ने मायाजीत बनने का दृढ़ संकल्प किया है ना। सारा ग्रुप चैलेन्ज करने वाला है। सब महावीर महावीरनियां हो ना? सदैव अपनी तकदीर को देखते हर्षित रहो तो आप सबको हर्षित रहते हुए देख अनेक दु:खी आत्मायें सुखी अनुभव करेंगी। आपकी खुशी अनेकों को बाप का परिचय दिलायेगी। हर एक चलता फिरता म्यूज़ियम बन जाये। जैसे म्यूज़ियम के चित्र परिचय दिलाते हैं वैसे आपका चैतन्य चित्र अनेकों को बाप का परिचय दे या प्राप्ति कराये। ऐसे सर्विसएबुल बनो। हिम्मत बहुत अच्छी रखी है। अभी हिम्मत के साथ जो भी कदम उठाते हो वह योगयुक्त हो। पहले ईश्वरीय मर्यादा प्रमाण है या नहीं है वह वेरीफाय कराकर अमल में लाते जाओ फिर एक-एक एग्ज़ाम्पल बन जायेंगे और भी ज़्यादा फुलवाड़ी को बढ़ाओ। जैसे अगले वर्ष से अभी बड़ा गुलदस्ता बनाया ना, अभी इससे बड़ा बनाना। कोई भी प्रकार की परिस्थिति आवे उसको पार करने का सहज साधन है बाप-दादा का साथ। अगर नहीं तो मुश्किल लगेगा। कितना भी कोई निर्बल है लेकिन सर्वशक्तिवान का साथ है तो शक्तिशाली बन जाता है।

अकेला नहीं समझो एक एक बहुत कमाल कर सकते हैं। जैसे दुनिया वाले बताते हैं कि एक-एक सितारे में दुनिया है, उन सितारों में तो दुनिया नहीं लेकिन आप जो लकी सितारे हो उन एक एक सितारों में दुनिया है अर्थात् अपनी-अपनी राजधानी है। तो एक-एक को अपनी-अपनी राजधानी स्थापन करनी है। कुमारियों को देख बाप-दादा हर्षित होते हैं, कुमारियां बहुत सर्विस में आगे जा सकती हैं। हर एक कुमारी को लक्ष्य रखना चाहिए कि मुझे विश्व सेवाधारी बनना है। यह लौकिक सर्विस तो निमित्त मात्र है। लक्ष्य यह रखो तो हम खुद जग करके जगत को जगाने वाले हैं। यह कुमारियों का संगठन बाप को प्रत्यक्ष कर सकता है। तो अगले वर्ष में विश्व कल्याणकारी की स्टेज लगी हुई हो। अच्छा।

कुछ अन्य पार्टियों से बातचीत

ग्याना पार्टी (११-२-७८)

बाप-दादा तो हर एक को दिलतख्तनशीन देखते हैं। जैसे कोई बहुत प्रिय बच्चे होते हैं या सिकीलधे लाडले होते जो उनको कभी नीचे धरनी या मिट्टी पर पांव नहीं रखने देते। तो बाप-दादा भी लाडले बच्चों को दिल तख्त के नीचे उतरने नहीं देते वहाँ ही विराजमान रखते। इससे श्रेष्ठ स्थान और कोई है? तो सदा वहाँ ही रहते हो ना? नीचे तो नहीं आते हो? जब और कोई स्थान है ही नहीं तो बुद्धि रूपी पांव और कहाँ टिक सकते हैं? याद अर्थात् दिलतख्तनशीन। बाप-दादा को जो निरन्तर योगी बच्चे हैं वह सदा साथ रहते हुए नज़र आते हैं। सहजयोगी हो ना। मुश्किल तो नहीं लगता? कोई भी परिस्थिति जो भल हलचल वाली हो लेकिन बाबा कहा और अचल। तो बाबा कहने में कितना टाइम लगता है। परिस्थिति के संकल्प में चले जाते हैं तो जितना समय परिस्थिति का संकल्प रहता उतना समय मुश्किल लगता। अगर कारण के बजाए निवारण में चले जाओ तो कारण ही निवारण बन जाये। ब्राह्मणों के आगे कोई परिस्थिति होती नहीं–क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान् हैं। उनके आगे यह परिस्थितियां चींटी समान भी नहीं। सिर्फ़ होता क्या है? जब कोई ऐसी बातें आती हैं तो उस समय उस कारण में समय लगा देते हैं। क्यों हुआ? क्या हुआ? उसके बजाए यह सोचें जो हुआ उसमें कल्याण भरा हुआ है, सेवा समाई हुई है तो चेन्ज हो जायेगा। भल रूप सरकम्सटान्सेज़ का हो लेकिन समाई सर्विस है ऐसा सोचने से और इस रूप से देखने से सदा अचल रहेंगे। तो अभी मधुबन से क्या परिवर्तन करके जायेंगे? सदा कम्पलीट, कम्पलेन नहीं। अब तक जो रिज़ल्ट है उसका प्रमाण अच्छा है। अब चारों ओर आवाज़ फैलाने का बहुत जल्दी प्रयत्न करो क्योंकि अभी समय है फिर इच्छा होगी लेकिन सरकमस्टांसेज़ ऐसे होंगे कि कर नहीं

सकेंग। इसलिए जितना जल्दी हो सके चक्रवर्ती बन सन्देश देते जाओ, बीज बोते जाओ। लकी हो जो ड्रामा अनुसार अपने जीवन से, वाणी से, कर्म से सर्व रीति से सेवा करने के निमित्त हो और आगे भी बन सकते हो। हर कर्म में सबको ज्ञान का स्वरूप दिखाई दे–यही विशेष लक्ष्य रखो क्योंकि कर्म आटोमेटिक (स्वत:) सबका अटेन्शन खिंचवाते हैं। प्रैक्टिकल कर्म एक बोर्ड का काम करता है। कर्म देखते ही सबका अटेन्शन जाता है कि ऐसे कर्म सिखलाने वाला कौन। तो अभी नवीनता क्या करेंगे ? लाइट हाउस बनेंगे ? एक स्थान पर रहते भी चारों ओर लाइट फैलायें जो कोई भी उल्हना न दे कि इतना नज़दीक लाइट हाउस थे और फिर भी हमको लाइट नहीं मिली। अच्छा।

जर्मना (13-2-78)

बाप-दादा को क्वालिटी पसन्द आती है। क्वालिटी अच्छी है तो क्वान्टिटी बन ही जायेगी। मेहनत करते चलो सफलता जन्म-सिद्ध अधिकार है। जर्मन की धरनी द्वारा भी कोई विशेष कर्म ज़रूर होना है। जर्मन की धरती में ऐसे विशेष व्यक्ति हैं जो एक भी बहुत नाम बाला कर सकता है, छिपे हुए रतन हैं जर्मनी में। चारों ओर आवाज़ फैलाओ तो निकल आयेंगे। अभी भी अच्छी मेहनत की है और भी चारों ओर फैलाओ। यही लक्ष्य रखो अगले वर्ष ग्रुप बनाकर लाना है वारिस क्वालिटी। लक्ष्य से सफलता हो ही जायेगी। अच्छा। और सब संकल्प छोड़ एक संकल्प में रहो मैं कल्प-कल्प की विजयी हूँ, विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, तो सफलता ही सफलता है। संकल्प किया और सफलता मिली। इसलिए ज़्यादा नहीं सोचो। प्लान बनाओ लेकिन कमल फूल समान हल्का रहो। सोचा, किया और समाप्त। जितना एक संकल्प में रहेंगे उतनी टचिंग अच्छी होती रहेगी। ज़्यादा संकल्प में रहने से जो ओरीजिनल बाप की मदद है वह मिक्सअप हो जाती है। इसलिए एक ही संकल्प कि मैं बाबा की, बाबा मेरा। मैं निमित्त हूँ, इस संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त होगी। चक्रवर्ती बनो तो बहुत अच्छा गुलदस्ता तैयार हो जायेगा। क्वान्टिटी भल न हो लेकिन जर्मन की धरनी से एक भी निकल आया तो नाम बाला हो जायेगा। अच्छा।